कंचना कुमारी -
अतिथि, शिक्षक, हिन्दी
मू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

सूफी प्रेम काव्यों की सामान्य विशेषताएं।

(1) प्रबन्ध कल्पना - (क) सूफियों ने लौकिक प्रेम कहानियों के माध्यम से अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना की है इनकी ये प्रेम कहानियां प्रबन्ध काव्य की कोटि में आती है। इन कवियों का उद्देश्य कोरी प्रेम कहानी न होकर प्रेम तत्व का निरूपन करना तथा उसका महत्व निर्धारित करना है जहां उन्होंने प्रबन्ध संघटन आदि का ख्याल रखा है वहां अपने उद्देश्य की अनुकूलता के लिए कहानी की घटनाओं में अपेक्षित परिवर्तन एवं परिवर्द्धन भी किया। सूफी कवियों ने प्रेमख्यानों में प्रेम पात्र के सौन्दर्य को किसी ऐसे प्रकाश के ज्योति-पुंज में चित्रित किया है प्रत्येक जीवन उसके ओर आकर्षित हो अपना स्वस्व प्रेम-पथ पर न्योछावर करने के लिए उद्धत है। सूफी काव्य की प्रेमिकाएं और प्रेमी-पथ पर आने वाली बाधाओं तथा विकट से विकट विघ्नों को तृणवत समझते हुए सिद्धि पथ पर बढ़ते है हालांकि साधारण जीवन में ऐसा होना कठिन है इन कथाओं में इन्होंने परियों, देवी, अप्सराओं का उपयोग किया है प्रेमी और प्रेमीकाओं के मार्ग में बीहड़ वन भयकर तुफान, विषैले

साँप, अजगर, विशालकाय हाथी, बलशाली गरुड़ पक्षी, मनुष्य-भक्षी, राक्षस तथा यंत्र-मंत्र और जादू टोना जानने वाले मानवों के द्वारा बाधाएं उपस्थित कर दी गई है। एक तो प्रेम कहानियों की कुछ ऐसी पद्धति उन्हें रिक्थ मे मिली थी दूसरी अपनी साधकों को सांसारिक विविध अन्तरायों और उलझनों का सामना करवाना प्रेम की दृढ़ता प्रदर्शित करने के लिए सूफी कवियों ने जरूरी समझा।

(ख) प्रबन्ध काव्योचित वस्तु एवं घटना-वर्णन मे जो प्रवाह और गति अपेक्षित है प्रायः इन काव्यों में उसका अभाव है कथावस्तु के निर्वाह एवं वस्तु-वर्णन में सबने प्रबन्ध रूढ़ियों की समान रूप से शरण ली है। इन प्रेमाख्यानो में प्रायः सर्वत्र वे ही समुद्र है वैसा ही तुफान है, वैसे ही वन-वनान्तर है और वैसी ही मकान फुलवारियां है। ये सब वस्तुएं जानी-पहचानी लगती है नगरों का वर्णन करते हुए वहां के सरोवरों, वाटिका महल, चित्रशाला और घाटों का वर्णन बहुत विस्तार से कर दिया गया है रूप-सौन्दर्य और स्वभावगत विशेषताओं का परिचय देते हुए भी इन्होंने काव्य-रूढ़ियों का आधिक प्रयोग किया है।

(ग) इन काव्यों की क्रम-योजना प्रायः समान ही है सर्वप्रथम मंगलाचरण में ईश्वर की सर्वशक्तिमान का वर्णन तत्पश्चात हजरत मुहम्मद और उनके सहयोगियों की प्रशंसा कर दी जाती है इनके अनन्तर शाहे वक्त का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन तथा पीर का परिचय और कभी-कभी अपने संप्रदाय का उल्लेख रचना निर्माण-काल आदि के वाचिक कथन द्वारा रचना का प्रथम अंश समाप्त कर दिया जाता है कथा का सूत्रपात नायक या नायिका के देश, कुल-दूरवर्ती होते है। नायक-नायिका की प्राप्ति के लिए सर्वस्व त्याग कर आंधी-तूफानों का सामना करते हुए घर से निकलता है। नायिका को विरह-दशा की अधीरता को कम करने के लिए पक्षी आदि की कल्पना कर ली गई है।